Research Paper

Volume : 5 | Issue : 3 | March 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

Vartaman Kaviyo Ke Samajik Chintan Ka Vishleshan

वर्तमान कवियों के सामाजिक चिंतन का विश्लेषण

Social Science

KEYWORDS :

Satbir Singh Lect., VPO Kosli, Near Pipli Bus Stand, Tehsil Kosli, Distt. Rewari, Haryana-123302

आधुनिक काल में समाज में अनेक परिवर्तन हुए हैं। समाज के इन परिवर्तनों से कवि भी अछूते नहीं हैं। कवि जैसा देखता है वैसा ही अपनी लेखनी से व्यक्त कर देता है। कवि किसी भी बात को कम– से–कम शब्दों में व्यक्त कर देता है। उनकी इन पंक्तियो की तरफ आम आदमी का ध्यान जाता है। आम आदमी कवि की बातों का मनन करता है और उनके बताए रास्ते का अनुसरण करता है। आज समाज में तकनीकी शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। कम्प्यूटर के कारण तो सब कुछ बदल गया है। सूचना एवं जन संचार के माध्यम से दुनिया सिकुड गई है। वर्तमान समय में कवि अपनी लेखनी इन विषयों पर भी चला रहा है। बेटी बचाओ' कार्यक्रम आज विशेष रूप से सामने आया है। क्योंकि लड़का–लड़की का अनुपात कम होता जा रहा है। कन्या भ्रुण हत्या, बेरोजगारी, मँहगाई, पर्यावरण इस सदी के प्रमुख विषय रहे हैं। वर्तमान समय के कवियों ने इन विषयों को बड़ी सजगता से अपनी लेखनी चलाई है।

वर्तमान समय के रचना कार नवल प्रभाकर ने बेटी के संदर्भ में अपनी पुस्तक 'नारी की व्यथा' में कहा है कि आज नारी की दुश्मन नारी है। नारी नहीं चाहती कि वह किसी कन्या को जन्म दे, खासकर दादी पोता होने की खबर जल्दी से सुनना चाहती है। इन पंक्तियों के माध्यम से बताया है कि–

बोली दादी, बेटा बहू का अल्ट्रासाऊण्ड करा के ला।
पता चलेगा बेटी है या बेटा, मुझे भी आकर जल्दी बता।''1

यहाँ तकनीकी ज्ञान का दुरूप्योग स्पष्ट झलकता है जिस मशीन द्वारा हम पेट की बिमारियाँ देख सकते हैं उसी का सहारा लेकर हम गर्भ में भ्रुण जाँच कर रहे हैं जिसके भयानक परिणाम भविष्य में देखने को मिलेगें। कवि ने अपनी कविता के माध्यम से इसे व्यक्त किया है।

बेटा और बेटी के फर्क को उजागर करते हुए युवा कवि अनिल 'पृथ्वी पुत्र' ने भी अपनी कविता 'बेटी पै' में कहा है कि–

छोरे पै दिशोठण हो सुथरा पोषण
सब लागैं धोषण क्यूँ लटठ बाजै बेटी पै
कोख बेहाल किते धन का जंजाल
बेरी बण काल मौत बिराजै बेटी पै।'' 2

यहाँ बेटी पर होते अत्याचार को दिखाया गया है। लड़का होता है तब लोग दिशोठन करते हैं, लेकिन लड़की के जन्म पर खुशियाँ कम मनाते हैं।

बेटी पर होने वाले अत्याचार व कोख में मारी जाने वाली लाखों–लाखों बेटियों की आवाज युवा कवि दलबीर सिहँ फूल ने अपनी कविता 'माँ मनै मत ना मारै'' में लिखा है कि –

तेरे आगे जोड़ू हाथ मात
क्यूं रही गर्भ में मार दिखे
मेरे भाई के चक्कर मैं
कदे खो दे ना परिवार दिखे।

यहाँ भी एक बेटी की व्यथा को प्रकट किया गया है। बेटे की चाह में माँ बेटी को गर्भ में ही मरवा रही है। वह नहीं चाहती कि बेटियाँ पैदा हो।

बेटी के साथ–साथ गरीबी व बेरोजगारी को भी इस शदी के युवा कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाया है। युवा कवि नवल प्रभाकर ने बेरोजगारी व गरीबी की व्यथा अपनी कविता 'गरीब बेरोजगार' लिखी है कि–

फिर बेरोजगारी और रिश्वत
तोड़ देती है कमर उसकी
निस्तेज आँखों से
फूट पड़ते है
सभी अरमान एक साथ 4

यहाँ प्रभाकर जी ने एक गरीब बेरोजगार की मन की बात बताई है। उन्होंने कहा है कि बेरोजगारी एवं गरीबी के कारण एक युवक के सभी अरमान धरे के धरे रह जाते हैं। वह उन्हें पूर्ण नहीं कर सकता। बेरोजगारी आज के समय में एक विकट समस्या है।

महँगाई के बारे में अनिल 'पृथ्वी पुत्र' ने अपनी कविता 'महँगाई का जबर जमाना' में लिखा है कि–

महँगाई का जबर जमाना कडकी मारैगी
बेईमानी को रोल, गोल, धोल जड़की मारैगी
ऐश डांगर–ढ़ोरा की कीते टोटा चूटी चून का
र भूख कूकदी बाट उकदी खड़की मारैगी।5

यहाँ महँगाई की मार को दिखाया गया है। महँगाई के कारण व्यक्ति अपना भरण–पोषण ठीक ढ़ंग से नही कर सकता। आगे बढ़ने की बात तो दूर रही, अपना जीवन बड़ी मुश्किल से बिताव स।

विज्ञान पर लिखते हुए युवा कवि देशराम देश प्रेमी ने अपनी कविता 'विज्ञान' मे लिखा है कि–

'ऐ विज्ञान बड़ा बलवान,
पहूँचाया चन्द्र पे इन्सान
खोजे नक्षत्र तारे,
गहराई सागर की आंकी
तोल दी धरती की माटी'' 6

विज्ञान के द्वारा जो कार्य किए जा रहे हैं उनका वर्णन इस कविता में किया है। आज विज्ञान ने मानव को उन्नति के शिखर पर पहूँचा दिया है। ऐसे यन्त्र विकसित हो गए हैं, जिनके माध्यम से बड़े–बड़े काम आसान हो गए हैं। अन्ध ा–विश्वास को विज्ञान ने खत्म कर दिया है। कुछ ऐसी बातें युवा कवियों ने उजागर की है।

देशप्रेमी जी ने लोकतन्त्र पर कटाक्ष करते हुए अपनी कविता 'कुर्सी नीति' में लिखा है कि–

लोकतन्त्र कहकर बहकाया है किसने
चन्द घरानों के सिवा राज पाया है किसने
यू ंतो हर बार चमकते हैं कई चेहरे
पर कुछ हजूरों के सिवा टिकट हथियाया है किसने।

लोकतन्त्र पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने आज की स्थिति को प्रकट किया है। आज नाम का ही लोकतन्त्र है जबकि वास्तविकता इस से परे है। आज की सत्ता में पूंजीपतियों व परिवारवाद का बोल बाला है। आम आदमी व सच्चे व्यक्ति का सम्मान आज भी नहीं है। योग्य उम्मीदवार प्रभावित रहता है। इसी को इस सदी के कवियों ने व्यक्त किया है।

भ्रष्टाचार के मामले में 'दलवीर सिहं फूल' ने अपनी कविता 'सुणो सब भ्रष्टाचारी' में कहा है कि–

सुणों सब भ्रष्टाचारी
तुम ही ने तो फैलाई
है ये बेरोजगारी
लूट–लूट कर देश
महँगाई में पिसे आज
नौजवान बेचारे। 8

भ्रष्टाचार आज देश को खोखला कर रहा है। वर्तमान समय में इन मुद्दों को कवियों ने अपनी लेखनी से व्यक्त किया है। आज के समय में जो मुद्दें व्यक्त है उनको इस सदी के कवियों ने अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

अतः सारान्श रूप में कहा जा सकता है कि साहित्य समय का दर्पण होता है। समाज में जैसी घटना घटती है कवि वैसा उल्लेख अपनी रचनाओं में करके आमजन का ध्यान इनकी ओर आकर्षित करते हैं ताकि इनमें अपेक्षित सुधार किया

जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नारी की व्यथा, लेखक नवल प्रभाकर, पृ0 8, निहाल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2014
2. कन्या क्रन्दन, लेखक अनिल 'पृथ्वी पुत्र', पृ. 23, सूर्य प्रभा प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2008
3. आथुणा की हवा चाल री, लेखक दलबीर 'फूल' पृ 30, सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल, संस्करण 2013।
4. आशायें, लेखक नवल प्रभाकर, पृ0 71, मंगल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2013।
5. कन्या क्रन्दन, लेखक अनिल 'पृथ्वी पुत्र', पृ. 39, सूर्य प्रभा प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2008
6. वर्दी की संवेदनाएं, लेखक देशराम देशप्रेमी, पृ0 40, सुकीर्ति प्रकाशन कैथल, संस्करण 2012
7. वर्दी की संवेदनाएं, लेखक देशराम देशप्रेमी, पृ0 101, सुकीर्ति प्रकाशन कैथल, संस्करण 2012
8. आथुणा की हवा चाल री, लेखक दलबीर 'फूल' पृ 46, सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल, संस्करण 2013।